रोज़गार और शादी

राकेश कुमार सिंह, लेखा अधिकारी
भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला

रोज़गार और शादी का है चोली–दामन का साथ,
मिल गई ग़र नौकरी तो समझो चल पड़ी बारात।

मेरा एक प्यारा मित्र है,
जिसका अच्छा चरित्र है,
यूं तो है वो एम.ए. पास,
पर बेरोज़गारी के कारण है उदास।
नौकरी की वह देख रहा था राह,
नहीं थी शादी की उसे परवाह।
एक दिन मैं उससे बोला,
ले आ अब तू भी किसी का डोला।

वह बोला– ओ भाई....!
यह तुम क्या पढ़ रहे हो,
शादी की बात कर,
क्यों दुखती नस पर हाथ धर रहे हो।

बेरोजगारी और शादी का नहीं है कोई मेल।
रोजगार के बिना नहीं चलती जीवन की रेल।
वह बोला जब मुझे कोई नौकरी मिल जाएगी
तो मेरी दुल्हन भी आ जाएगी।
शादी की बात वह यूं ही गया टाल
वक्त बीतता गया उम्र हो गई 38 साल।

उसके माता–पिता भी तंग हो आये थे
बेटा कुंवारा न रह जाये, इस सोच में घबराए थे।
एक दिन वह आ पहुंचा मेरे घर
श्रीमती जी से बोला–भाभी अब तू ही कुछ कर।
ढूंढ दे एक लड़की कुंवारी
जो हो सारे जग से न्यारी।

बोली श्रीमती जी–
है ये लड़की 48 वर्ष की कुंवारी
देख रही है वह भी वर की राह बेचारी
कहो तो उससे बात चला दूं
तुम्हारे भाई को नई भाभी ला दूं
ऐसे हुआ था मेरे मित्र का रिश्ता
श्रीमती जी बनी उस बेचारे का फ़रिश्ता

आपसे भी मेरा बस यही है निवेदन
शादी के लिए आज ही कर दो आवेदन।

विचित्र चलचित्र

ज्योत्स्ना नौटियाल
केन्द्रीय विद्यालय, जतोग छावनी, शिमला

जीवन के इस चलचित्र में,
समय निर्बाध ही तो चलता है,
उम्र की हर दहलीज को पार करते हुए,
चलचित्र के रूपहले पर्दे पर।

उम्र के हर पड़ाव में नया रूप देखते हैं,
वही चलचित्र वही परिदृश्य
वही पार्श्वसंगीत, वही हलचल,
वही रंगमंच, वही रंगकर्मी।

पर समय का निर्बाध प्रवाह,
हमारी सोच से
नित नया संदेश देता है,
सड़कों पर चलती नित नई,
पर एक जैसी भीड़,
अरे! ये क्या?

बचपन में तो ये बच्चे मुझे
अपने खेलकूद के साथी,
बड़े, अंकल–आंटी,
बुजुर्ग, दादा–दादी व नाना–नानी लगते थे,
वही युवा अवस्था में
बच्चे लगते अबोध।

युवा अवस्था में अपनत्व का गर्व,
टक्कर लेने वाले प्रतिद्वंदी
अपनी सी अकड़ रौब का सामना
करने को तैयार
और अधेड़ों को तो
निःसहाय व बेचारा समझते।

अरे! यह क्या?
वही परिदृश्य
वही रंगमंच, वही सब कुछ।
उम्र के साथ दृष्टिकोण का
परिवर्तन का दौर।

आज अधेड़ की उम्र में आए तो
बच्चों के लिए कुछ नया करने का जज्बा,
युवाओं को हरदम कुछ नया बताने का मन,
बुजुर्गों की अँगुली थामने का दिल।

वहीं अधेड़ उम्र के साथियों से
अपनी बात बांटने का मन कर,
दिल भर आया।

यह उम्र का तकाज़ा है या
दृष्टिकोण का असर,
बदलते समय का किस्सा है,
या फिर जीवन का नया हिस्सा है।

क्षणिकाएं

अनुपम सक्सेना
भारत सरकार मुद्रणालय, शिमला

आज भी ...
आज भी लगता है
कि वक्त के किसी मोड़ पर
एम लम्हा मेरा इन्तज़ार कर रहा है ...
एक मासूम से लम्हे का इन्तज़ार
मुझे लौट आने को कहता है
एक खामोश सा लम्हा
गीत बन मेरा साथ देता है
एक उदास सा लम्हा
अश्क बन कर हर तस्वीर धुंधली कर देता है
एक वीरान सा लम्हा
सूखे पत्तों से ढकी इन राहों पर मेरे पीछे चलता है
एक मुस्कान सा लम्हा
मुझे तुम्हारी याद दिला देता है
एक अधूरा सा लम्हा है
ज़िंदगी ...
लौट आओ ना ...

मैं 'शून्य' भी न हो सका

प्रेम सागर
भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल,
तारा देवी, शिमला

हम एक छोर से, साथ उड़े थे
तुम बादल बन गए, और .....
मैं वाष्प भी न हो सका
तुम घटा बनकर बरस गए, और .....
मैं बूंद भी न बन पाया
मैं जल भी न हो सका

हम एक झरने से, साथ गिरे थे,
तुम दरिया बनकर बह गए, और .....
मैं इक लहर भी न हो सका,
तुम बहते–बहते 'सागर' हो गए, और ....
मैं किनारों में उलझकर रह गया।

हम एक डाल पर साथ उगे थे,
तुम फूल बनकर खिल गए, और .....
मैं कांटा भी न हो सका
तुम टूट कर किसी की शान हो गए, और ....
मैं साख भी न बन पाया छाल भी न हो सका।

हम एक मजार पर, साथ बैठे थे,
तुम बैठे–बैठे घरौंदा हो गए, और....
मैं तिनके भी न हो सका
तुम आत्मा और परमात्मा, दोनों साथ हो गए, और ...
मैं न बीज बन पाया, न जीव हो सका

हम एक राह में साथ पड़े थे
तुम लुड़कते–लुड़कते, राहगीर बन गए, और .....
मैं एक कंकड़ भी न हो सका
तुम चलते–चलते, सावन हो गए, और .....
मैं न रेगिस्तान बन पाया, और ....
न ही बंजर हो सका।

इस ब्रह्माण्ड में, साथ विघटित हुए थे
तुम बिखरते हुए भी, वसुंधरा हो गए, और ...
मैं एक कण भी न हो सका
तुम पहाड़, नदिया, पवन सब हो गए, और ...
मैं, मैं भी न बन पाया,
और शून्य भी न हो सका.... क्योंकि

तुम, तुम बन गए थे
मैं को जाना ही नहीं,
तू में समर्पण करना आ गया, और ...
मैं, मैं की जिद्द पर अड़ा रहा
जो आज मुझको ही खा गया।

शील और सत्य ही आत्मा हैं

संत सुकरात सत्य और सदाचार को सर्वोपरि धर्म बताया करते थे। उनका मत था कि बड़े–से–बड़ा संकट आने पर भी मानव को सत्य व न्याय पर अटल रहना चाहिए। यदि सामने काल भी खड़ा हो तो डरकर सत्य का त्याग कदापि नहीं करना चाहिए।

सुकरात की तेजस्विता व निर्भीकता देखकर गलत कर्मों में लगा वर्ग उनका विरोधी बन गया। उन्हें सत्य से विचलित करने के लिए धमकियों का सहारा लिया गया, लोभ–लालच दिए गए। इसके बावजूद वे सत्य पर अटल रहे, तो उन पर भ्रामक आरोप लगाकर मृत्युदंड सुना दिया गया। निर्णय दिया गया कि उन्हें जहर पिलाकर मार डाला जाए। जहर पिलाने की तिथि घोषित कर दी गई। सुकरात के अनुयायी भक्त उनके पास पहुंच गए। उनकी आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। सुकरात को पिलाने के लिए जहर पीसा जा रहा था। वह जहर पीसने वाले के पास पहुँचे तथा बोले, 'लगता है, तुमने कभी जहर नहीं पीसा है। जल्दी–जल्दी पीसकर मुझे पिलाओ, जिससे पास बैठे लोगों का रोना बंद हो जाए।

सुकरात को प्याले में भरकर जहर पिलाया गया। कुछ देर बाद वे बोले, 'जहर का प्रभाव दिखाई देने लगा है। हाथ पैर सुन्न और निर्जीव होने लगे हैं, परंतु मित्रो! यह जहर मेरे भीतर के शील व सत्य का बाल भी बांका नहीं कर सकता। शील व सत्य ही तो मेरी आत्मा है। आत्मा अमर है, उसे यह कैसे मारेगा?' यह कहते कहते संत सुकरात शांत हो गए। उनके अनुयायी उनकी निर्भीकता देखकर नतमस्तक हो उठे।

अपना अपना महाभारत

डॉ. पंकज क
केन्द्रीय विद्यालय जतोग, शिम

अरण्य झुरमुट में खड़ा
हर वृक्ष एकदम एकाकी
गुमसुम प्रतिपल झेल रहा है
प्रकृतिकृत व मानवनिर्मित
कष्टों व तानहों को

इन्हीं के ताने–बाने में
अंदर ही अंदर, कहीं न कहीं
बुन रही है मकड़ी सदृश्य
अपना ही जाल
जैसे–जैसे फैलता जाता है
यह जाल, उलझता ही जाता है
और गहरे अंतर्मन तक

यूं तो तूफान का हर झोंका
अरण्य झुरमुट में खड़े
हर वृक्ष को आंदोलित करता है
पर सभी का अपना–अपना
है कुरूक्षेत्र
है अपना–अपना महाभारत

इस आंदोलन में कोई तो घुटता है
कोई उत्तेजित हो जाता है
कोई अर्जुन बनता है तो
कोई बनता है कर्ण

कोई तो अभिमन्यु–सा, चक्रब्यूह में
धराशाई हो जाता है
सफल वही होता है जिसे
मिलता है कृष्ण सा सारथी

हर वृक्ष को कहां मिल पाता है कृष्ण
कर्ण–सा वीर और सर्वस्व लुटाने वाला होकर भी
अभिमन्यु सा निडर व रणकुशल योद्धा भी
कृष्ण के अभाव में हार ही जाता है
अपना महाभारत

काश! अरण्य झुरमुट में खड़े
हर एकाकी वृक्ष को मिल पाता
एक–एक कृष्ण
तो प्रत्येक अर्जुन

निष्काम कर्मण्यता से परिपूर्ण हो
वासांसी जिर्णाय यथा विहाय
को ग्रहण कर
निःसंदेह जीत ही जाता
अपना–अपना हर महाभारत

राजभाषा पुरस्कार

राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम, शिमला कार्यालय को राजभाषा के प्रयोग के लिए राजभाषा विभाग से प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह पुरस्कार पंजाब एवं हरियाणा के राज्यपाल महामहिम श्री कप्तान सिंह सोलंकी जी ने अमृतसर में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में श्री तेज मोहिन्द्र सिंह, निदेशक को प्रदान किया।

मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।

– लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

धन का सदुपयोग

धर्मशास्त्रों में कहा गया है कि धन का सदुपयोग या तो जरूरतमंदों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में अथवा अपने परिवार व समाज के लिए मर्यादापूर्वक उपभोग करने में निहित है। जो व्यक्ति कृपण होता है, उसका धन मिट्टी–पत्थर के समान पड़ा रह जाता है। ऐसा धन असीम दुःख का कारण भी बनता है।

आदि गुरु शंकराचार्य जी ने कहा था, 'दान संविभाग' अर्थात् संपत्ति का सम्यक् विभाजन ही दान है। बाइबिल में कहा गया है कि वैसा दान ही सार्थक होता है, जिसमें दाएं हाथ से दिए गए दान का पता, बाएं हाथ को भी न चले।

माघ जितने बड़े कवि थे, उतने ही बड़े दानी। अपने दरवाजे पर आने वाले याचक को दान देने से उन्हें संतोष मिलता था। एक दिन राजा ने राजसभा में उनके द्वारा रचित काव्य की पंक्तियां सुनकर उन्हें इनाम के रूप में धन दिया। उन्होंने तमाम धनराशि रास्ते में याचकों को बांट दी। घर पहुंचे, तो द्वार पर भी याचक खड़ा था। उसे देने के लिए उनके पास कुछ नहीं बचा था। याचक ने आंखों में आंसू भरकर कहा, 'मेरी बूढ़ी माँ बीमार है। दवा के लिए भी पैसे नहीं हैं।'

माघ ने सुनते ही द्रवित होकर प्रार्थना की, 'हे मेरे प्राण, इस विवशता में आप स्वयं मुझे छोड़ चलिए। आत्महत्या पाप है, अन्यथा मैं प्राण त्याग देता।'

अचानक उनका एक मित्र पहुंचा। वह देखते ही सब समझ गया। उसने अपनी जेब से मुद्रा निकाली और याचक को दे दी।

माघ ने मित्र में भी भगवान के दर्शन किए, जिसने उनकी लाज बचा ली।

बलि प्रथा अधर्म है।

ढाई सौ वर्ष पूर्व कुरुक्षेत्र में जन्मे योगिराज वनखंडी महाराज परम विरक्त व सेवा भावी संत थे। उन्होंने दस वर्ष की आयु में ही उदासीन संप्रदाय के सिद्ध संत स्वामी मेलारामजी से दीक्षा लेकर समस्त जीवन धर्म व समाज के लिए समर्पित करने का संकल्प लिया। एक बार पटियाला के राजा कर्मसिंह संत वनखंडी को अपने राजमहल में ले गए। जब उन्होंने उनसे रात को महल में ही निवास करने का आग्रह किया, तो वनखंडी महाराज ने कहा, 'साधु को किसी भी गृहस्थ के घर नहीं ठहरना चाहिए।' राजा के हठ को देखकर वे रुक गए और आधी रात को चुपचाप महल से निकलकर वन में जा पहुँचे।

संत वनखंडी एक बार तीर्थयात्रा करते हुए असम के कामाख्या देवी के मंदिर के दर्शनों के लिए पहुंचे। उन्हें पता चला कि कुछ अंधविश्वासी लोग देवी को प्रसन्न करने के नाम पर निरीह पशु–पक्षियों की बलि देते हैं। कभी–कभी कुछ दबंग व धनी लोग व्यक्तिगत हित साधने के लिए नरबलि जैसा पाप कर्म करने से भी बाज़ नहीं आते। वनखंडी महाराज ने निर्भीकतापूर्वक सभी के समक्ष कहा, 'सभी प्राणिजन देवी माँ की संतान हैं। माँ करुणामयी होती है, वह किसी की बलि से खुश कैसे हो सकती है।' उसी दिन से सभी ने संकल्प लिया कि नरबलि जैसा घोर पाप कर्म कभी नहीं होगा।

वनखंडी जी सिंध–सक्खर पहुंचे। वहां उन्होंने सिंधु नदी के तट पर उदासीन संप्रदाय के साधुबेला तीर्थ की स्थापना की। यह तीर्थ उनकी कीर्ति का साकार स्मारक है।

क्या तुम सच में बुरी हो

पूजा कुमारी ठाकुर
केन्द्रीय विद्यालय, जतोग

सब कहते हैं तुम बुरी हो,
क्या तुम सच में बुरी हो ?

लक्ष्य प्राप्ति के रास्ते सुझाती हो,
हंसाने के लिए थोड़ा बहुत रूलाती हो,
तो क्या तुम सच में बुरी हो?

क्या सही, क्या गलत, कौन अच्छा, कौन बुरा,
ये समझाती हो,
तो क्या तुम सच में बुरी हो ?

बुरी हो तो सही,
तुम हमें सोना जो बनाती हो,
सबके बदले अंदाज और तुम्हारा वही स्वभाव

खुशी के आने पर,
गहरी सांसों का अहसास दिलाती हो,
तो क्या तुम सच में बुरी हो ?

किसी भी हद तक जूझने का हौंसला बंधाती हो,
जिन्दगी के भंवर में तैरना सिखाती हो,
तो क्या तुम सच में बुरी हो ?

हाँ होगी बुरी उनके लिए
जो जिंदगी के थपेड़ों से डरते हैं,
मुझे हंसाने के लिए बुरी बनी तुम
मेरी जीवन साथी हो,

तुम बुरी हो तो बुरी ही सही,
पर मुझे तुम बुरी नहीं हो।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है। - महात्मा गांधी

सूरज

कुमार विशाल बाजीवान,
आर्थिक अधिकारी, श्रम ब्यूरो, शिमला

सुबह–सुबह उजियाला और लालिमा लेकर
पूरब से तू आता है
शाम को फैला अंधकार जगत में
पश्चिम में तू छिप जाता है
दिन और रात होते तुझसे,
तुझसे ही है सुबह और शाम
न तू हो तो निष्क्रिय संसार,
कर न पाएं हम कुछ भी काम
तेरे कारण होती सर्दी–गर्मी
तुझसे ही बसंत और बरसात
इस जग को रखे उजियारा
चाँद और तारे मिलकर तेरे साथ
लेकर जल इस जग से सहर्ष
कर वर्षा हरा–हरा बाग खिलता है
अगर रूष्ट हो जाए जो
इस जग में अकाल फैलाता है
तू ही जल देता किसान को
तब जाकर पेट देश का भरता है
दे धन–धान्य मानव को
संसार को समृद्ध करता है।

सत्यवादी, कर्मठ, स्वाभिमानी और पवित्र हृदय वाला व्यक्ति निर्धन होने पर भी श्रेष्ठ गिना जाता है।

क्यों तोड़ा तुमने इन कलियों को

दुलाल विश्वास
आर्थिक अधिकारी, श्रम ब्यूरो, शिमला

क्यों तोड़ा तुमने इन कलियों को
अभी तो इनसे खुशबू महकती
किरणों से चमक ये देकर
पौधों की शान बन जाती

कोमल–सी ये कलियाँ
बालक सी आँचल पकड़तीं
इन मोहक हवाओं में झूमकर
चंचल स्वप्न हरदम देखती

बनी थी ये सुन्दर फूल
जो इस वातावरण को महकातीं
सूर्य के चमकते प्रकाश को देखकर
भौरों के मनों को ये ललचातीं

बनी नन्हीं थी ये बागों की शोभा
जिनके ऊपर मधुमखियाँ बैठतीं
रस को प्यार से अंदर खींचकर
मस्त से अपने घर को चलतीं

रोका है तुमने जिनकी आकांक्षाओं को
वह प्रकृति को सुगंध करतीं
अपनी पंखुड़ियों को फैलाकर
सुन्दर फूल वह बन जातीं

वन की अग्नि चंदन की लकड़ी को भी जला देती है, अर्थात् दुष्ट व्यक्ति किसी का भी अहित कर सकता है। -आचार्य चाणक्य

गुरुकुल

विमल कुमार शर्मा, प्रधान प्रणाली विश्लेषक
राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र, शिमला

राघव शहर के प्रतिष्ठित क्रिस्चन मिशनरी स्कूल में गणित और विज्ञान पढ़ता था। अभी–अभी कुछ ही महीनों पहले उसने सरकारी नौकरी का प्रस्ताव छोड़कर इस नौकरी को प्राथमिकता दी थी। आप को लग रहा होगा कि ऐसा क्यों किया राघव ने जबकि अध्यापक की सरकारी नौकरी तो प्राईवेट नौकरी से ज्यादा अच्छी होती है, मैंने भी राघव से पूछा था तो उसने बताया कि वे करीब दो साल पहले अध्यापक की सरकारी नौकरी कुछ माह कर चुका है लेकिन इस नौकरी में सिवाए राजनैतिक नेताओं के पीछे घूमने और गाँव के स्थानीय निठल्लों के ताने सुनने के सिवा कुछ नहीं है। स्कूल शिक्षण–संस्थान अब स्थानीय राजनीति के अड्डे बने हुए हैं और भैया मेरा मन खट्टा हो गया है इन से। शहर के जाने माने प्राइवेट स्कूल में पैसे भले ही कम मिलें लेकिन बच्चों के माँ बाप हाथ जोड़कर खड़े रहते हैं भले ही वो नेता, ऑफिसर या व्यापारी क्यों न हो। मैं राघव के आत्मसमान से जुड़े तर्क के आगे निरुत्तर था। राघव और मैं शाम को अक्सर मिलते, वह मुझसे उम्र में लगभग सात आठ साल छोटा था, वह कभी घर आने के बाद मिलता कभी घर आते हुए मिलता, उसके कंधे पर हमेशा एक अच्छा सा बैग होता जिसमें नई नई पत्रिकाएँ, अच्छी सी किताब या नई खरीदी हुई गज़ल, कोई स्तरीय संगीत की कैसेट। राघव जो भी पढ़ता या जो भी सुनता उसे बड़े प्रेम और आग्रह से मेरे साथ बाँटता। हम दोनों के घंटे यूँ बीत जाते कि समय का पता ही न चलता। राघव में एक आकर्षण था और आगे बढ़ने का एक सकारात्मक रवैया भी, जो मुझे उसके और ज्यादा करीब ले जाता। मैं बेसब्री से उसका इंतजार करता। मैं और राघव अक्सर उसके कमरे में घंटों डूब कर ओशो की कैसेट्स भी सुनते और गुलाम अली और जगजीत सिंह की गज़ल भी। भविष्य को लेकर राघव की परिकल्पनाएँ आम विचारधारा से हट कर थी।

रमेश भाई मैं नौकरी छोड़ रहा हूँ अब मेरा मन यहाँ नहीं लगता। मुझे अब अपना ही स्कूल खोलना है। राघव ने यह बात मुझे बिना किसी भूमिका के एक दम कह दी। मैं सोच नहीं पा रह था की इसे क्या कहूं, वैसे तो मैं उस से बड़ा था पर बौद्धिक स्तर पर तो मैं उसका अनुयायी ही था, लेकिन मैं यह भी जानता था की राघव की आर्थिक स्थिति ज्यादा अच्छी नहीं है। उसके माता–पिता उस पर निर्भर तो न थे पर आर्थिक रूप से उसकी कोई सहायता करने की स्थिति में भी नहीं थे। मेरी आर्थिक स्थिति भी ऐसी थी कि मैं चाहकर भी थोड़ा बहुत ही सहयोग कर पाता। एक हफ्ते में राघव ने नौकरी छोड़ दी। स्कूल वालों ने भी उसे समझाने की बहुत कोशिश की। उन्होंने कहा कि छुट्टियाँ ले लो और ठण्डे दिमाग से सोचो, तब तक हम किसी वैकल्पिक अध्यापक से काम चला लेंगे। लेकिन राघव ने किसी की एक न सुनी। स्कूल वालों ने दस दिन के अंदर उसका सब हिसाब चुकता कर दिया। उसे कुल मिलाकर पंद्रह हजार रुपये मिले। मुझे बहुत फिक्र हो रही थी लेकिन राघव को कोई ज्यादा फिक्र नहीं थी। वह तो अपनी आगे की योजनाओं का खाका खींच रहा था।

चूंकि इस बरस का आधा सत्र बीत चुका था इसलिए वह स्कूल तो अभी ज्वाइन नहीं कर सकता था। उसने शहर में एक कमरा किराये पर ले लिया और उसमें एक अलमारी, एक ब्लैक बोर्ड, दस कुर्सियां और पांच छोटे टेबल लगा दिए। वह खुद हर रोज शहर के स्कूलों में जाता और वहां के अध्यापकों से ऐसे अच्छे बच्चों के बारे में सूचनाएँ एकत्रित करता जो कि पढ़ने में मेधावी किन्तु गरीब थे। कुछ ही दिनों में राघव के पास तीस बच्चों की सूची थी। अब अगला कदम उन बच्चों से और उनके माता पिता से बात करना था ताकि वे राघव के पास अपने बच्चे भेजने के लिए राजी और सहज हो सकें। इन तीस बच्चों में बारह लड़कियां और अठारह

लड़के थे। सबसे पहले राघव की मुलाकात गुरुप्यारे से शाम को उनके घर पर हुई। गुरुप्यारे राज मिस्त्री का काम करते थे और अभी अभी घर पहुंचे थे। राघव जैसे ही उनके घर पहुंचा वे थोड़े सकपका गए। क्योंकि वो राघव से परिचित नहीं थे, राघव ने उनसे कहा कि आपकी बेटी सीता पढ़ने में बहुत अच्छी है और मैं चाहता हूँ कि मै उसे पढ़ाऊँ ताकि वह अपने जीवन में और आगे बढ़ सके। साहिब, हम इस काबिल नहीं कि हम अपने बच्चों को स्कूल से आगे शिक्षा दिलवा सकें। हम तो उसकी फीस ही बड़ी मुश्किल से दे पाते हैं तो आपको हम क्या दे पाएंगे! गुरुप्यारे की पत्नी रज्जी ने राघव से कहा। राघव ने कहा आपको कोई पैसा देने की जरूरत नहीं, परीक्षा और जीवन में बच्चों की सफलता ही मेरा मेहनताना है। कल अगर आपकी बच्ची जीवन में कुछ बन जाती है तो आपकी दुआएँ और फिर अपनी इच्छा से उसका सहयोग ही मुझे अपने इस नेक काम को आगे बढ़ाने में सहायता करेगा। गुरुप्यारे का घर छोटा सा और कच्चा था इसलिए रज्जी ने घर के पास ही नीम के पेड़ के नीचे खाट लगा दी थी, गुरुप्यारे और राघव खाट पर बैठ गए। रज्जी नीचे ही जमीन पर। राघव प्रेम से उनके विचार सुनता रहा। बहनजी दो तीन दिन में हम पढ़ाई शुरू करवा देंगे आप सीता को भेजती रहना बाकि सब मेरी जिम्मेदारी है, अभी आप आज्ञा दें मुझे और लोगों से भी मिलने जाना है राघव ने विनम्रता से कहा।

एक और बात अच्छी हो गयी थी कि स्कूल के दिनों से ही किताबों के प्रचारक राघव से मिलते रहते थे और उनमें से कुछ उसकी कार्य के प्रति निःस्वार्थ भावना से प्रभावित भी थे। उन्हीं में से दो पब्लिशर्ज बच्चों की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए शिक्षण सामग्री तैयार करना चाह रहे थे, उन्होंने इस विषय में राघव से बात की। राघव को भी यह प्रस्ताव जंच गया। क्योंकि एक तो यह उसके मन के करीब था और फिर इस तरह से जीवकोपार्जन के लिए कुछ मदद हो जाएगी। उसने हाँ कर दी और पब्लिशर ने उसे पांच हजार रुपये का एडवांस चेक दे दिया। राघव खुश था अब वो आनन्द से सराबोर अपने सपने साकार करने में व्यस्त था।

पूरे एक हफ्ते की मेहनत के बाद बारह बच्चे राघव के पास पढ़ने आने लगे। वह खुश था और बच्चे भी, क्योंकि राघव न सिर्फ उन्हें पढ़ाता अपितु उन्हें अच्छी और दिलचस्प बातें भी सुनाता, अच्छा संगीत सुनाता, उन्हें नचाता और पढ़ाई के बाद कुछ देर खिलाता भी। बच्चों के लिए एक नया अनुभव था। उन्हें अपना जीवन स्तर बदला हुआ लग रह था वह अब ज्यादा आत्मविश्वास महसूस कर रहे थे कि कोई है जो उन्हें हर तरह से समझता है। इस नए माहौल में जहाँ बच्चे अपनी पढ़ाई में मन लगा रहे थे वहीं उनके भीतर छिपी कुछ और प्रतिभाएं भी बाहर आ रही थी। कुछ बहुत अच्छा गाते थे, कुछ खेलने में अच्छे थे, कुछ को लिखने का शौक था और सब मिलाकर कहें तो एक उल्लास था। चूँकि सभी बच्चे निम्न वर्ग से थे तो ये माहौल उन सबको भी समाज में एक नई पहचान दे रहा था। राघव ने अपने इस संस्थान का नाम भी गुरुकुल रखा था। धीरे धीरे समय बीत रहा था, राघव के प्रयासों को शहर में पहली पहचान तब मिली जब उनके बनाये गए एक साइंस प्रोजैक्ट को राजकीय स्तर पर प्रथम पुरस्कार मिला।

राघव की नींद आज सुबह तीन बजे ही खुल गई। कुछ देर बिस्तर पर करवटें बदलने के बाद भी सोने की सारी कोशिशें बेकार रही। उसका मन आज बहुत उत्सुक और बैचैन था। ऐसे बेचैनी उसने आज तक महसूस नहीं की थी। आज बोर्ड का दसवीं का रिजल्ट आ रहा था और राघव के चार छात्रों ने दसवीं की परीक्षा दी थी। राघव को उनके परिणाम की फिक्र हो रही थी। किसी तरह सुबह के चार बज गए। राघव ने जा कर ठण्डे पानी से स्नान किया और पौने पांच बजे राघव मंदिर पहुँच गया। उसने मंदिर में पूजा की और प्रभु से बच्चों की सफलता के लिए दुआ मांगी। आज भी बाकी दिनों की तरह मंदिर से घर पहुंचा और घर आकर अपने कमरे में बैठ कर माँ का इंतजार करने लगा कि वह चाय ले कर आती ही होगी। अभी चाय पी ही रहा था की

सब बच्चे उसके घर ही पहुँच गए। राघव का मन खुश हो गया उसने माँ को कहा कि सब बच्चों के लिए कुछ मीठा बनाओ, आज का दिन बहुत शुभ होने वाला है। माँ भी बिना देरी किये हलवा बनाने में जुट गयी। इतने में हामिद दौड़ता हुआ आया। वो अखबार वाली गाड़ी के रुकते ही वहां से अखबार ले कर आ गया। उसे राघव के पास पहुँचने की इतनी जल्दी थी कि उसने अखबार को खोल कर भी नहीं देखा। जैसे ही उसने राघव के हाथ में अखबार दिया तो सब की सांसें तेज हो गयी। राघव जल्दी से अखबार में रिजल्ट ढूँढ़ने लगा। इतने में अखबार का प्रथम पृष्ठ उसके हाथ से फिसल कर नीचे गिर गया। वो जैसे ही उसे उठाने को नीचे झूका तो उसकी नजर एक दम सीता के नाम पर पड़ी उसने बाकि अखबार छोड़ जैसे ही पहला पन्ना पढ़ना शुरू किया तो मानो उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। सीता ने बोर्ड में पहला स्थान हासिल किया था और बाकी तीन बच्चों के नाम भी बोर्ड के पहले दस प्रतिभाशाली बच्चों की सूची में थे। यह आज तक का रिकार्ड था किसी संस्थान और शहर के लिए। सब ने जोर से एक दूसरे को गले लगाया। सबकी आँखों में आंसू थे।

आज पचीस वर्ष बाद गुरुकुल स्कूल का विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय स्तर पर नाम है क्योंकि उसकी सफलता के पीछे निःस्वार्थ प्रयास और बच्चों का विश्वास है। सीता आज कल अमेरिका की सिल्कौन वैली में एक प्रतिष्टित आईटी कम्पनी में मुख्य कार्यकारी अधिकारी है। अब गुरुप्यारे और रज्जी वहीं रहते हैं, लेकिन सीता आज भी राघव से जुड़ी हुई है। बाकी सभी प्रतिभाशाली छात्रों की तरह, जो आर्थिक और वैचारिक रूप से राघव की मदद करते हैं। राघव का बहुत बड़ा नाम है लेकिन इन सब के बावजूद गुरुकुल में आज भी मेधावी बच्चों को वैसे ही मुफ्त पढ़ाया जाता है जैसे कि पच्चीस बरस पहले।

बेल्जियम में जन्में फादर बुल्के ने हिंदी प्रेम के कारण अपनी पीएचडी थीसिस हिंदी में ही लिखी। जिस समय वे इलाहाबाद में शोध कर रहे थे उस समय देश में सभी विषयों की थीसिस अंग्रेजी में ही लिखी जाती थी। उन्होंने जब हिंदी में थीसिस लिखने की अनुमति माँगी तो विश्वविद्यालय ने अपने शोध संबंधी नियमों में बदलाव लाकर उनकी बात मान ली। उसके बाद देश के अन्य हिस्सों में भी हिंदी में थीसिस लिखी जाने लगी।

माँ

शेर सिंह, एम.टी.एस.
सर्किल कार्यालय, शिमला–171009

न समझ पाया, न समझ पाऊँ
तुझ पे माँ बलिहारी जाऊँ।
दुनिया में लाई तू सहन करके पीड़ा
माँ तू उठाती मेरी ज़िम्मेदारी की पीड़ा

मुझे पालने के लिए अपना चैन गंवाया,
पर ये बता माँ, बदले में तूने क्या पाया।
मैं रोता तो तू रोती,
मैं सोता तो तू सोती।

मुस्कुराहट देख कर मेरी,
न जाने कितनी खुशी होती।
चोट लगती मुझे, दर्द तुझे होती,
बिना मेरी जिंदगी लम्बी सजा है।

अतुल्य तू अतुल्य तू।
तेरी मुस्कान के लिए जहान् छोड़ दूं।
दुनियां में लाया तूने,
सब कुछ सिखाया तूने।

मेरे लिए निंदिया अपनी त्यागी,
मेरे लिए ही रात भर जागी।
तेरे बिना क्या वजूद था,
मेरे लिए दुनियाँ में आना दूर था।

सुन्दर भी है। नटखट भी है।
दरगाह भी है। तीर्थ भी है।
है लफज़ तू शीर्षक भी है।
है जन्मदाता, तू विधाता भी है।

पलकों पर बिठा तुझे।
रानी जैसे सजाऊँ तुझे
तू है रब्ब मेरी, रब्ब जानता है।
तू माँ है रब मेरी,
जग सारा जानता है।

सभ्यता की ओर एक नन्ही कुलाँच

प्रवीण कुमार
हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, पंथाघाटी, शिमला

राहुल जिद्दी था, वेबाक, उच्छृंखलता से लबरेज़, किन्तु एक हंसते–खेलते परिवार की जान था। उस दिन पिकनिक पर राहुल, उसका बड़ा सिद्धार्थ व उसकी माँ शहर की आवो–हवा से दूर निकल पड़े थे। यह लम्हा हर रोज़ की तरह नीरस न था इसलिए दोनों भाई आज बस जी जाना चाहते थे।

पहले बैडमिंटन, फिर चोर–पुलिस का खेल, कुश्ती और न जाने क्या–क्या! थक हारकर वे दोनों भाई शांत हो गए। माँ ने दोनों को त्वरित ऊर्जादायक फल केले, सेब आदि दिये। राहुल तो मानों उन पर टूट ही पड़ा था। उसने केले के छिलकों को जहां–तहां फैंक दिया और फिर से मशगूल हो गया चौकलेट खाने में। बड़ा भाई सिद्धार्थ भले ही इतना बड़ा न था किन्तु आधारभूत समझ भरी पड़ी थी। वह जानता था कि यह केले के छिलके और छोटे भाई द्वारा बिखेरा गया अन्य कूड़ा–करकट किसी राहगीर के लिए परेशानी का सबब बन सकता है। मोहन ने राहुल को डांटा भी लेकिन यह डांट भी राहुल को भेद न सकी, उसने जिद्द में और भी कचरा फैंक दिया। सिद्धार्थ ने माँ के पास जाना उचित समझा। किन्तु माँ के लाड–प्यार में और राहुल की जिद्द में समझ का एक अनसुलझा संभ्रात फासला था। इसी उहापोह में पार्क में आया एक व्यक्ति उस कचरे पर फिसल गया। किन्तु वह इन्सान व्यावहारिक था उसने तुरंत पर्यावरण मित्र के लिए झाड़ू उठा लिया। राहुल शर्म से लाल हो गया था। वह समझ गया कि जीवन में जिद्द खाने–पीने तक ही सही है उसके उपरांत यह ठेठ असभ्यता है। साथ ही उसने जो पर्यावरण मित्र के साथ अघात किया था उसका अहसास भी उसकी बुद्धि कर चुकी थी। इसी बीच माँ और सिद्धार्थ ने भी बिखरे कूड़े को कूड़ेदान में डालना शुरू कर दिया। अब राहुल ने भी मुस्कराते हुए कूड़े–करकट को कूड़ेदान में ही डालना आरंभ कर दिया। उसने कसम खा ली कि वह जीवनपर्यंत इस सीख की पालना करेगा।

किसी भी व्यक्ति की वर्तमान स्थिति को देखकर उसके भविष्य का मज़ाक न उड़ाओ, क्योंकि कल में इतनी शक्ति है कि वह एक मामूली कोयले के टुकड़े को हीरे में तबदील कर सकता है।

– आचार्य चाणक्य